विशाल सामूहिक विवाह सम्मेलन, आदिवासी मीणा समाज, नैनवां, बूंदी में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

जय हो भगवान मीनेश जी की।

आध्यात्मिक सन्यास आश्रम धाम, देई, नैनवां में आज आप सभी लोगों के बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आज यहाँ विशाल सामूहिक विवाह सम्मेलन के आयोजन के लिए मैं सबसे पहले समाज के सभी लोगों को बधाई देता हूँ। आपके इस विचार की प्रशंसा करता हूँ। आज विवाह बंधन में बंधने जा रहे सभी नवदंपतियों (251 जोड़े) को बधाई देता हूँ, बहुत बहुत शुभकामनाएं और आशीर्वाद देता हूँ।

सामूहिक विवाह सम्मेलन हमारे देश की सामूहिक परिणय संस्कृति है। जिसमें कि सम्पूर्ण समाज एक साथ मिलकर एक स्थान पर शुभ कार्य करते हैं। सामूहिक विवाह सम्मेलन समाज में सामाजिक परिवर्तन करने का एक बड़ा माध्यम है। समाज के सभी लोग एक छत के नीचे इकट्ठे होकर सामूहिकता के संस्कार के साथ सामूहिक विवाह सम्मेलन करते हैं, जिसमें सब की सहभागिता होती है।

पिछले कई वर्षों में सामूहिक विवाह सम्मेलनों से हमारे समाज में सामाजिक परिवर्तन हुआ है। इससे धन का अपव्यय कम होता है। और इससे जो धन बचेगा, यह हमारे बच्चों की शिक्षा में काम आएगा, उनके जीवन में बदलाव लाने में काम आएगा। महात्मा ज्योतिबा फुले जी से लेकर बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी तक हमारे सभी महापुरुषों ने भारत की जनता को साफ-साफ कहा था कि बिना शिक्षा के उनका भविष्य नहीं बदल सकता।

हमारे नायकों ने सदा समाज को यह संदेश दिया है कि भले ही दो रोटी कम खानी चाहिए, लेकिन अपने बच्चों को स्कूल जरूर भेजना चाहिए। हमारे महापुरुषों की इन्हीं शिक्षाओं और संदेशों को जीवन का ध्येय बनाकर आज आदिवासी मीणा समाज काम कर रहा है। यह कार्यक्रम मीणा समाज की मजबूती और समाज की एकता को दर्शाता है। समाज आज बहुत जागरूक हुआ है और समाज के सभी लोगों ने एकसाथ इस बात को माना है कि शिक्षा से बढ़कर कोई निवेश नहीं है। मीणा समाज ने अपनी पीढ़ियों के लिए शिक्षा में निवेश किया है। आदिवासी मीणा समाज ने पिछले कई वर्षों से समाज के अंदर से उन प्रथाओं को खत्म किया है, जो समाज के लिए हानिकारक थी।

एक समय था जब मीणा समाज के लोग पढ़ाई-लिखाई से दूर थे। समाज के लोग अध्ययन से वंचित थे। मगर पिछले कुछ दशकों में मीणा समाज के लोगों ने बड़े स्तर पर सामाजिक बदलाव किया है। आज़ादी के बाद के इन 75 वर्षों में जिस तरह से हमारे देश में जो सामाजिक - आर्थिक बदलाव हुए हैं, उन बदलावों में मीणा समाज की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। मीणा समाज ने शिक्षा के महत्व को समझा है। शिक्षा को लेकर समाज में बड़ी जागरुकता आई है। इसे शिक्षा की क्रांति कहना ज़्यादा ठीक होगा। समाज ने शिक्षा क्रांति कर तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ी है।

मीणा समाज के युवा और बहुत से लोग आज देश भर के बड़े बड़े कॉलेज-यूनिवर्सिटी में शिक्षा देने का भी काम कर रहे हैं। मीणा समाज के प्रोफेसर्स, टीचर्स आज देश भर में अध्ययन करवा रहे हैं। आज आप देश भर में किसी भी विभाग या किसी भी मंत्रालय में चले जाओ, वहाँ समाज के लोगों ने शिक्षा हासिल कर अपनी प्रतिभा से अपनी जगह बनाई है। समाज सुधार के सभी क्षेत्रों में मीणा समाज ने काम किया है। समाज के सभी जन प्रगतिशील सोच अपनाने के लिए जागरुक हुए हैं। एक जिम्मेदार समाज की यही निशानी होती है।

सामूहिक विवाह सम्मेलन आज के समय की एक बड़ी आवश्यकता है। हमारे समाज को संगठित करने के लिए, एकजुट रखने के लिए और समाज को सशक्त बनाने के लिए सामूहिक विवाह सम्मेलन बहुत आवश्यक है। सामाजिक एकता के बल पर ही इस समाज ने विकास किया है। आज के समय में मीणा समाज के लोग राजनीति में, समाज सेवा में, शिक्षा में, खेल में और हर एक क्षेत्र में अपनी जगह बना रहे हैं।

मीणा समाज कई वर्षों से संघर्ष करता आया है। और संघर्ष करते हुए ही समाज के बड़े बुजुर्गों ने विषम परिस्थिति में अपने बच्चों को पढ़ाया है, उन्हें आगे बढ़ाया है। आज समाज के पढ़े-लिखे बच्चे सिर्फ अपनी उन्नति नहीं कर रहे हैं, बल्कि वो देश के लिए भी बेहतरीन काम कर रहे हैं। समाज के बच्चों से मैं कोटा की कोचिंग में भी मिला हूँ तो संसद भवन में भी मिला हूँ। मैंने आईआईटी/मेडिकल की तैयारी करने वाले बच्चों से भी बातचीत की है, तो प्रशासनिक अधिकारी बनकर संसद भवन के अध्ययन दौरे पर आए समाज के युवकों से भी बातचीत की है।

इस समाज ने उन्नति की दिशा में कदम बढ़ाए हैं, लेकिन मंजिल अभी हासिल नहीं हुई है, क्योंकि शिक्षा का जो स्तर होना चाहिए, वो अभी भी समाज में नहीं है। आज समय बदल चुका है। आज हमें ये नहीं देखना है कि समाज में साक्षरता का स्तर कितना है! बल्कि

आज हमें यह देखना है कि समाज में कितने बालक-बालिका हायर एजुकेशन हासिल कर पाते हैं! कितने बालक-बालिका पीएचडी में एडमिशन ले पाते हैं, कितने प्रशासन में जा पाते हैं, कितने बालक-बालिका अपने मन का कर पाते हैं; आज इस दिशा में हमें तेजी से आगे बढ़ना है।

मुझे विश्वास है कि आदिवासी मीणा समाज अपनी प्रगति से और इस तरह के सामूहिक सामाजिक कार्यक्रमों से आगे भी अन्य समाजों को रास्ता दिखाएगा। इसी संदेश और विश्वास के साथ आप सभी को पुनः शुभकामनाएं।

जय हो भगवान मीनेश जी की।

———